इकाई 8 माया तथा चीन कैलेण्डर

इकाई की रूपरेखा

8.0 अधिगम प्रतिफल

8.1 प्रस्तावना

8.2 माया कैलेण्डर

8.3 माया कैलेण्डर और पृथिवी के विनाश का मिथक

8.4 चीनी कैलेण्डर

8.5 चीनी कैलेण्डर और वहाँ के पर्व त्योहार

8.6 सारांश

8.7 शब्दावली

8.8 प्रश्नावली

8.9 संदर्भ ग्रन्थ सूची

8.0 अधिगम प्रतिफल

विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में कैलेंडरों का विकास भी भिन्न-भिन्न तरीके से हुआ। इस इकाई में हम विश्व के दो विपरीत भागों में स्थित देशों में कैलेण्डर की विकासयात्रा को जानने का प्रयास करेंगे। इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप -

- अमेरिका और चीन में समय मापन की पद्धतियों के अन्तर को जान सकेंगे ।
- माया और चीन कलैण्डर के विज्ञान को समझ सकेंगे।
- दोनों ही कैलेण्डर में समानता को जानने में सक्षम होंगे।

8.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में हम देख आए हैं कि विश्व में समय मापन की विधियों के विकास में कहीं न कहीं भारतीय कालगणना का प्रभाव दिखता है। ऐसे में यह देखना रोचक हो सकता है कि विश्व के दो नितांत विपरीत भागों में स्थित दो क्षेत्रों में समय मापन की विधियों में कैसे साम्यता मिलती है। ये दो क्षेत्र हैं उत्तरी अमेरिका के सुदूर दक्षिण में स्थित मेक्सिको, ग्वाटेमाला आदि भागों की प्राचीन काल की सभ्यता माया सभ्यता और एशिया के सुदूर पूरब में स्थित चीन की सभ्यता।

कच्छप महादेश जिसे औपनिवेशिक काल में अमेरीका का नाम दिया गया, में प्राचीन काल जिसे वर्तमान में 1500 ईसा पूर्व का काल माना गया है, में एक सनातन संस्कृति विद्यमान थी। इसे वर्तमान खोजकर्ताओं ने माया सभ्यता नाम दिया। माया सभ्यता के बारे में पुरातत्वविदों और वैज्ञानिकों को भी अधिक जानकारी नहीं मिल पाई है। इसका कारण है कि इन क्षेत्रों में

प्रारंभिक उपनिवेशवादियों ने भयानक नरसंहार किया था। इसीलिए इस सभ्यता को एक रहस्य के रूप में देखा जाता है। परंतु माया सभ्यता का ठीक से अध्ययन किया जाए तो उसके भारत से संबंध स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते हैं। इतना तो आधुनिक इतिहासकारों ने भी स्वीकार कर लिया है कि लगभग 20 हजार वर्ष पहले एशिया से ही जाने वाले प्रवासी मनुष्यों ने ही सभ्यता का विकास किया था।

उत्तर अमेरिका के दक्षिणी भाग साउथ ईस्ट मेक्सिको, बैलीज, पश्चिमी होंडूरास और अल सल्वाडोर में माया संस्कृति नामक एक प्राचीन सभ्यता विकसित हुई थी। माया सभ्यता कोलंबियाई मीजो अमेरिकी सभ्यता से पहले की मानी जाती है। जहां पर आज मैक्सिको का यूकाटन नामक स्थान है वहां किसी जमाने में माया सभ्यता के लोग रहा करते थे। माया सभ्यता के लोग कला, गणित, वास्तुशास्त्र, ज्योतिष और लेखन आदि के क्षेत्र में काफी अग्रणी थे। स्पैनिश आक्रांताओं के आने के बाद उनकी सभ्यता और संस्कृति का धीरे-धीरे क्षरण होने लगा। ग्वाटेमाला, मैक्सिको, होंडुरास तथा यूकाटन प्रायद्वीप में इस सभ्यता के अवशेष खोजकर्ताओं को मिले हैं।

माया लोगों में समय मापन का एक तरीका भी विकसित था। वर्ष 2012 में उसकी वैश्विक स्तर पर काफी चर्चा हुई थी, क्योंकि माया समय मापन की एक बड़ी इकाई का अंत उस वर्ष होने वाला था, जिसका अर्थ यह मान लिया गया था कि इस वर्ष सृष्टि का अंत हो जाएगा। कई लोगों ने इसे माया कैलेण्डर के अंत के रूप में भी चित्रित किया, परंतु यह सत्य नहीं था।

यूरोपीय इतिहासविदों के द्वारा चीन की सभ्यता को भी एक रहस्य के रूप में प्रदर्शित किया जाता है। हालाँकि चीन का लिखित इतिहास चीन और भारत दोनों ही स्थानों में पर्याप्त उपलब्ध है, परंतु चीन की सभ्यता को भारत से भिन्न और समानांतर दिखाने के प्रयास में यूरोपीय इतिहासकारों ने उसे रहस्यमयी दिखलाने का प्रयास किया है।

8.2 माया कैलेण्डर

माया सभ्यता में गणित और खगोल का विकास उल्लेखनीय है। यहां के निवासियों की खगोल और ज्योतिष में विशेष योग्यता थी। माया लोगों ने विभिन्न घटनाओं, धार्मिक त्योहारों और जन्म-मरण संबंधी बातों का संधारण करने के लिए पंचांग का विकास किया। यह उसके पश्चात् विकसित हुए ग्रीक और रोमन कैलेण्डर से बिल्कुल भिन्न था। इस पंचांग की गणनाएं दशमलव और शून्य के अंकन से काफी निकट हैं। वर्तमान युग के उच्च दक्षता वाले संगणक (सुपर कम्प्यूटर) और माया की गणितीय गणनाओं में अन्तर 0.060 तक ही निकल पाता है। इसके लिए भारतीय पंचांग गणनाओं में भी 60 डिग्री को मानक विचलन माना गया है।

माया पंचांग में वर्षों की गणना दो प्रकार से की जाती है। इनमें से पहले प्रकार में एक साल 290 दिन का होता है। दूसरे प्रकार में वर्ष में 365 दिन होते हैं। 365 दिन का साल तो निश्चित तौर पर सौर गति पर आधारित होता होगा, जबकि 260 दिनों का साल संभवतः नौ चंद्रमास का होता हो। इस तरह इसके चार चंद्र वर्ष पूरे होने पर तीन सौरवर्ष ही पूरे होते होंगे, जिसका सटीक तालमेल करते हुए वर्ष के आंकलन के साथ ही साथ ग्रह नक्षत्रों और सूर्यग्रहण, चंद्रग्रहण तक के आकलन का उन्हें विशिष्ट ज्ञान था।

माया कैलेण्डर में तिथि तीन विधि से निर्धारित की जाती थी। तिथि के निर्धारण के लिए जॉलकिन यानि ईश्वरीय पंचांग और हाब यानि लोक पंचांग को आधार मान कर गणना की जाती थी। इन्हीं के आधार पर माया खगोलविद और ज्योतिषी भविष्यवाणियां करते थे। माया सभ्यता की गणना और पंचांग को ही वर्तमान पुरातत्त्ववेत्ताओं ने माया कैलेण्डर कहा है। माया पंचांग में 20-20 दिनों के 18 महीने होते थे और 365 दिन पूरा करने के लिए पाँच दिन अतिरिक्त जोड़ दिए जाते थे। इन पाँच दिनों में किसी भी प्रकार का सांसारिक कार्य करना वर्जित था।इन दोनों विधियों में दिनों की गणना की जाती थी।

माया कैलेण्डर के महीने

1. पॉप
2. उओ
3. जिप
4. जॉट्ज
5. टीजेक
6. जुल
7. याक्सकिन
8. मेल
9. चेन
10. याक्स
11. जैक
12. सेह
13. मैक
14. कान किन
15. मुआन
16. पैक्स
17. कयाब
18. कुम्बू

उनके द्वारा विकसित लोंग काउंट कैलेण्डर (गणना विस्तार कैलेण्डर) ई. पू. 3114 से शुरू होता है। यह बिल्कुल भारतीय काल गणना के अनुसार कलियुग के आरम्भ का समय है। भारतीय गणना में आर्यभट्ट की गणना कहती है कि 3102 ईसा पूर्व कलियुग का आरम्भ हुआ था। माया कैलेण्डरबक्तूनों में बंटा है। इस कैलेण्डर के हिसाब से 394 साल का एक बक्तून होता है और पूरा कैलेण्डर13 बक्तूनों में बंटा है। भारत में एक कल्प में चौदह मन्वंतर माने गए हैं। इस प्रकार माया का एक कालगणना कल्प 13 बक्तूनों में बंटा है।

8.3 माया कैलेण्डर और पृथिवी के विनाश का मिथक

माया कैलेण्डर में गणना की तीसरी विधि में वर्षों की गणना की जाती थी। इसे लोंग काउंट कैलेण्डर कहा जाता है। दैनन्दिन गणना के अलावा मानव इतिहास हेतु लंबी गणना की भी आवश्यकता पड़ती है। हमने भारतीय कालगणना की इकाइयों के संदर्भ में देखा था कि किस प्रकार विशाल विशेषकर खगोलीय कालगणना के लिए युग, मन्वन्तर आदि की बड़ी इकाइयां बनाई गई थीं। आधुनिक कालगणना में भी एज, इपोक आदि इकाइयां बनाई गई हैं। इसी प्रकार माया लोगों ने भी लंबी कालखंड की गणना के लिए विशेष इकाइयों की रचना की थी। उनकी इस गणना विधि को आज लोंग काउंट कैलेण्डर कहा जाता है। माया लोग इसे इज्टालचुंग कहते थे।

लोंग काउंट कैलेण्डर में दिनों के आधार पर इकाइयां बनाई गई थीं जो कि निम्नानुसार हैं –

20 किम (दिन)	01 यूइनल	20 दिन
18 यूइनल	01 तुन	360 दिन
20 तुन	01 कातुन	7200 दिन
20 कातुन	01 बक्तुन	144000 दिन

इस प्रकार एक बक्तुन लगभग 400 वर्षों का होता था। इस लोंग काउंट कैलेण्डर के एक चक्र में कुल 13 बक्तुन हुआ करते हैं। यानी माया के एक लोंग काउंट कैलेण्डर में कुल 5200 वर्ष होंगे। प्रत्येक 5200 वर्षों के बाद नया लोंग काउंट कैलेण्डर प्रारंभ होगा। माया कैलेण्डर के अनुसार पिछले लोंग काउंट कैलेण्डर का 13वां बक्तून 21 दिसम्बर 2012 को समाप्त हो रहा था। उसके बाद उनका नये इज्टालचुंग का पहला बक्तुन प्रारंभ हुआ। चूँकि यह 13वाँ बक्तुन था और यूरोपीय विशेषकर ईसाई लोगों में 13 अंक काफी अशुभ माना जाता है, इसलिए उन्होंने प्रचार कर दिया कि इस दिन पृथिवी का विनाश हो जाएगा। ध्यान देने की बात यह है कि इस प्रकार के विनाश की चर्चा माया सभ्यता में नहीं है, बल्कि इसकी चर्चा ईसाई थियोलॉजी में कयामत की काफी चर्चा पाई जाती है। इसलिए यह प्रचार किया जाने लगा था कि माया कैलेण्डर के अनुसार 21 दिसंबर, 2012 को पृथ्वी का विनाश हो जाएगा। माया कैलेण्डर में केवल इतना कहा गया है कि 13वें बक्तुन के समाप्त होने के बाद समय को रिसेट करना होता है। कयामत होने की भविष्यवाणी को बल देने का काम एक पुरातात्त्विक खोज के आधार पर किया गया। इस खोज में मेक्सिको में एक 1300 वर्ष प्राचीन शिलालेख प्राप्त हुआ था, जिसमें 13वें बक्तुन की समाप्ति और सृष्टि और युद्ध के माया देवता बोलोन योक्ते का चित्र बना हुआ था।

बहरहाल, यह पूरा प्रचार गलत साबित हुआ था।

8.4 चीनी कैलेण्डर

भारत की ही भांति चीन में भी सौर-चांद्र कैलेण्डर ही प्रचलित था। चीनी कैलेण्डर में एक वर्ष में 365.25 दिन होते थे। चीन के लोगों को भी नक्षत्रों का ज्ञान था। भारत की ही भांति चीन में भी कैलेण्डर बनाना राज्य का काम था, मत-पंथों का नहीं। यह हम आगे देखेंगे कि यूरोप में कैलेण्डर मतवादों से अधिक प्रभावित रहे हैं। चीन में राजा के दरबार में एक कैलेण्डर निर्माता अनिवार्य रूप से हुआ करता था और उसका काफी सम्मान भी होता था। पारंपरिक चीनी

कैलेण्डर एक कृषि कैलेण्डर है। इससे पूर्व का कैलेण्डर जिएल एक पारंपरिक कैलेण्डर है। इसे लोली भी कहा गया है। यह भी एक चांद्र-सौर कैलेण्डर है, जो खगोलीय घटनाओं के अनुसार वर्षों, महीनों और दिनों की पहचान करता है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान चीन की पीली नदी के पास हुई खुदाई में बहुत सारी हड्डियां पाई गईं, जिन पर प्रश्न खुदे हुए थे। ये हड्डियां हजारों की संख्या में मिली हैं। ये हड्डियां बैल के कंधे की थीं या फिर कछुए की पीठ की। पुरातत्त्वविदों ने इनका काल शांग वंश यानी लगभग 1400 से 1600 ईसा पूर्व का माना है। इन हड्डियों पर तारीखें भी खुदी हुई हैं। इन तारीखों का अध्ययन करने से ध्यान में आता है कि चीनी लोग 365.25 दिनों का वर्ष और 29.5 दिनों का चंद्रमा का माह मानते थे। इन हड्डियों पर तारों के नाम भी अंकित हैं और 1281 वर्ष ईसा पूर्व के एक ग्रहण का भी उल्लेख है। चीन में चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के अनेक अंतरिक्षीय मानचित्र भी प्राप्त होते हैं।

भारत के बार्हस्पत्य वर्षों की गणना के अनुसार ही चीन में भी 60 वर्षों का एक चक्र स्वीकार किया जाता था। इन 60 वर्षों के नाम दो आधारों पर रखे गए हैं। पहला आधार है द्युस्थानीय जिसे स्वर्गस्थानीय भी कहा जा सकता है। इसमें 10 नाम प्राप्त होते हैं। दूसरा आधार है पृथिवीस्थानीय जिसमें 12 नाम प्राप्त होते हैं। इन 12 नामों में से छह नाम पालतू पशुओं से संबंधित हैं और छह नाम जंगली पशुओं से।

चीन में दिन मध्यरात्रि से शुरू और समाप्त होते हैंऔर महीने भारत की ही भांति अमावस्या से शुरू होते हैं। शीतकालीन संक्रांति के बाद दूसरी या तीसरी अमावस्या पर नववर्ष का आरम्भ होता है। यह भी भारत की ही एक परंपरा के समान है, जिसमें दीपावली यानी कार्तिक अमावस्या से नववर्ष का प्रारंभ होता है।

ताइचू कैलेण्डर

चीन का पहला व्यवस्थित चंद्र-सौर कैलेण्डर 104 ईसा पूर्व में झोउ राजवंश ने तैयार करवाया था। इसका नाम था ताइचू कैलेण्डर। यह कैलेण्डर भारत के पंचांगों के अनुरूप ही बनाया गया था। इस कैलेण्डर में 12 राशियों के समान ही सूर्य के परिक्रमा पथ को 12 भागों में बांटा गया था। इन 12 भागों के नाम वहां पर मौसमी घटनाओं तथा कृषि की गतिविधियों के अनुसार रखे गये थे। 12 भागों में से हरेक को दो भागों में बांटा गया और इस प्रकार 24 भाग बने। प्रत्येक भाग में 15 दिन यानी एक पक्ष हुआ करता था।

चीन में अन्यान्य राज्यों द्वारा उपरोक्त कैलेण्डर के प्रतिस्पर्द्धी चंद्र-सौर कैलेण्डर भी तैयार किये गये। लू राज्य ने अपना स्वयं का लू कैलेण्डर तैयार कराया। जिन ने जिया कैलेण्डर102 ई. तैयार करवाया। इस वर्ष की शुरुआत मार्च विषुव के निकट अमावस्या के दिन से होती थी। किन ने जुआनक्सु का कैलेण्डर जारी किया, जिसमें वर्ष की शुरुआत अमावस्या के दिन से होती है जो शीतकालीन संक्रांति के निकट होती है। सॉन्ग का यिन कैलेण्डर शीतकालीन संक्रांति के बाद अमावस्या के दिन अपना वर्ष शुरू करता है। इन पंचांगों को छह प्राचीन या तिमाही-शेष कैलेण्डर के तौर पर जाना जाता है, क्योंकि सभी एक वर्ष की गणना 365.25 के रूप में करते हैं। महीने अमावस्या के दिन से शुरू होते हैं और एक साल में 12 या 13 महीने होते हैं। साल के अंत में अधिक मास जोड़ा जाता है। कियांग और दाई कैलेण्डर व जुआनक्सु कैलेण्डर के आधुनिक संस्करण हैं, जिनका उपयोग पर्वतीय लोगों द्वारा किया जाता है।

221 ईसा पूर्व में किन राजवंश के किन शी हुआंग ने चीन को एकीकृत किया और किन कैलेण्डर आरम्भ किया। इसने जुआंक्सु कैलेण्डर के नियमों को आधार बनाया लेकिन महीने को जिया कैलेण्डर से तय किया गया। यह वर्ष ग्रेगोरियन केलेंडर के 10वें महीने से आरम्भ होता था और 9वें महीने पर समाप्त होता था। वर्ष का अंतिम महीने को जियूयू के नाम से पुकार जाता था। हान राजवंश के काल में भी किन कैलेण्डर ही प्रचलन में था।

हालांकि चीनी कैलेण्डर ने 20वीं सदी की शुरुआत में देश के आधिकारिक कैलेण्डर के रूप में अपना स्थान खो दिया, लेकिन सामाजिक रूप से इसका चलन बंद नहीं किया जा सका। कुछ कैलेण्डर1908 में प्रकाशित किंग राजवंश के अंतिम कैलेण्डर का अनुसरण करते थे। इस कैलेण्डर में 1978 के मध्य-शरद ऋतु समारोह की तारीख और तिथि में समयांतर आने से इसका चलन धीरे-धीरे कम होने लगा।

देर से मिंग राजवंश के दौरान, जू गुआंग्की और उनके सहयोगियों ने पश्चिमी खगोलीय अंकगणित पर आधारित एक नया कैलेण्डर निर्मित किया। यह नया कैलेण्डर राजवंश के अंत तक भी चलन में नहीं लाया जा सका। प्रारंभिक किंग राजवंश में, जोहान एडम शॉल वॉन बेल ने कैलेण्डर को शुंझी सम्राट को सौंप दिया। किंग सरकार ने इसे शिक्सियन (मौसमी) कैलेण्डर के रूप में जारी किया। इस कैलेण्डर में सौर संक्रांति सौर वृत्त के साथ 15 डिग्री का आधान होने से होती हैं। हालांकि, पेरिहेलियन के पास की जलवायु अवधि की लंबाई 30 दिनों से कम है और दो मध्य-जलवायु महीने हो सकते हैं। शिक्सियन कैलेण्डर ने मध्य-जलवायु-अवधि के नियम को अंतराल महीने को छोड़कर, अनुक्रम में महीने तय करने के लिए बदल दिया। चीन में वर्तमान में चलन में जो पारम्परिक कैलेण्डर है वह शिक्सियन कैलेण्डर का ही अनुगामी है।

8.5 चीनी कैलेण्डर और वहाँ के पर्व त्योहार

इसी प्रकार दुनिया भर में चीनी समुदाय अपने उत्सवों और भविष्यवाणियों के लिए आज भी चीन के पारम्परिक चांद्र-सौर कैलेण्डर का ही उपयोग करते हैं। चीनी नव वर्ष (वसंत महोत्सव) पहले महीने के पहले दिन होता है और इसे पारंपरिक रूप से 'युआन दान या झेंग री' कहा जाता था। वियतनाम में, इसे 'छहनल' के रूप में जाना जाता है और कोरिया में इसे 'के' रूप में जाना जाता है। परंपरागत रूप से यह वर्ष की सबसे महत्वपूर्ण छुट्टी थी। यह चीन, हांगकांग, मकाऊ, ताइवान, वियतनाम, कोरिया, फिलीपींस, मलेशिया, सिंगापुर और इंडोनेशिया में एक आधिकारिक अवकाश है। यह थाईलैंड के नरथिवाट, पट्टानी, याला और सैटुन प्रांतों में भी एक सार्वजनिक अवकाश है और न्यूयॉर्क शहर में एक आधिकारिक पब्लिक स्कूल अवकाश है। इस प्रकार चीनी कैलेण्डर का महत्व आज भी जीवन्त है।

इसके अलावा डबल थर्ड फेस्टिवल तीसरे महीने के तीसरे दिन होता है और कोरिया में इसे (समजिनाल) के नाम से जाना जाता है। ड्रैगन बोट फेस्टिवल, या डुआनवु फेस्टिवल, पांचवें महीने के पांचवें दिन है और चीन, हांगकांग, मकाऊ और ताइवान में आधिकारिक अवकाश है। यह वियतनाम में भी मनाया जाता है। कोरिया में जहां इसे डानो या सुरिनल के रूप में जाना जाता है। किक्सी महोत्सव सातवें महीने के सातवें दिन की शाम को मनाया जाता है। यह वियतनाम में भी मनाया जाता है, जहां इसे थट टच और कोरिया में चिल्सेक के नाम से जाना जाता है। दोहरा नौवां महोत्सव नौवें महीने के नौवें दिन मनाया जाता है। यह वियतनाम में भी मनाया जाता है जहां इसे टेट ट्रिंग कु और कोरिया में जहां इसे जुंगयांगजेओल के नाम से जाना

जाता है। लालटेन महोत्सव पहले महीने के पंद्रहवें दिन मनाया जाता है और इसे पारंपरिक रूप से युआन जिओ या शांग युआन महोत्सव कहा जाता था।

8.6 सारांश

कुल मिला कर कहा जा सकता है कि माया और चीन के कैलेण्डर दोनों ही भारतीय कालगणना से पूरी तरह प्रभावित रहे हैं। यह कहना कठिन है कि भारतीय ज्योतिषियों का अमेरिका में संपर्क कैसे हुआ होगा, परंतु नवीनतम अनुसंधानों से यह स्थापित होने लगा है कि अमेरिका में माया सभ्यता का विकास एशियायी लोगों ने ही किया था। विपुल संभावना है कि वे भारतीय ही रहे होंगे। इसी प्रकार चीन की कालगणना पर भी हम भारतीय कालगणना का भरपूर प्रभाव पाते हैं। चीन के उत्सव उनकी पारंपरिक कालगणना पर ही आधारित हैं। चीन ने 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक ग्रिगोरियन कैलेण्डर को स्थापित नहीं होने दिया। परंतु कम्युनिस्ट शासन के आने के बाद वहाँ के परंपरागत कैलेण्डर को त्याग कर ग्रिगोरियन कैलेण्डर अपना लिया गया है। फिर भी भारत की ही भांति चीन के लोग भी अपने कैलेण्डर का प्रयोग करते आ रहे हैं।

8.7 शब्दावली

कच्छप महादेश - औपनिवेशिक काल में अमेरीका का नाम

माया सभ्यता - अमेरिका की प्राचीन माया सभ्यता ग्वाटेमाला, मैक्सिको, होंडुरास तथा यूकाटन प्रायद्वीप में स्थापित थी। माया सभ्यता मैक्सिको की एक महत्वपूर्ण सभ्यता थी। इस सभ्यता का आरम्भ 1500 ई० पू० में हुआ। यह सभ्यता 300 ई० से 900 ई० के दौरान अपनी उन्नति के शिखर पर पहुंची इस सभ्यता के महत्वपूर्ण केन्द्र मैक्सिको, ग्वाटेमाला, होंडुरास एवं अल - सैल्वाड़ोर में थे। यद्यपि माया सभ्यता का अंत 16 वी शताब्दी में हुआ किन्तु इसका पतन 11 वी शताब्दी से आरम्भ हो गया था।

श्री चमनलाल कृत हिन्दू अमेरिका पुस्तक में मय सभ्यता तथा भारतीय सभ्यता की पारस्परिक निकटस्थ समानताएं वर्णित हैं। स्वयं 'मय' शब्द ही भारतीय हैं। मैक्सिको में श्री गणेश जी तथा सूर्यदेव की प्रतिमाएं प्राप्त हुई हैं। मैक्सिको वासियों के पारम्परिक गीतों में अपनी नव - विवाहिता कन्या को वर - पक्ष के घर भेजते समय मां द्वारा प्रकट किए गये उद्गार भारतीय विचारों के अत्यधिक समरूप हैं। मुखाकृति की दृष्टि से प्राचीन मैक्सिको के लोग उसी जाति के प्रतीत होते हैं जिस जाति के भारत के उत्तर - पूर्वी क्षेत्र के निवासी हैं। प्राचीन भारतीय शब्दावली में, अमरीकी महाद्वीपों वाला पश्चिमी गोलार्द्ध पाताल कहलाता था। यह हो सकता है कि कि वाली को पाताल क्षेत्र की ओर खदेड़ने का सन्दर्भ ऐतिहासिक रूप में उसकी पराजय तथा बाली द्वीप पर बने द्वीपस्थ दुर्ग से हटकर सुदूर मैक्सिको में जा बसने का द्योतक हो।

बक्तून - 394 साल का एक बक्तून

8.8 प्रश्नावली

1. माया सभ्यता किस देश से सम्बन्धित है?
2. माया पंचांग कितने बक्तूनों में बंटा है ?

3. चीन का पहला चान्द्र-सौर पंचांग कौन सा है?
4. जुआनासु पंचांग किसने जारी किया?
5. अमेरिका को औपनिवेशिक शासन से पहले क्या कहा जाता था ?
6. माया कैलेण्डर में कितने महीने है?
7. किस पंचांग में 12 राशियों के समान सूर्य के परिक्रमा पथ को 12 भागों में बांटा गया है?
8. चीनी नववर्ष कब मनाया जाता है?
9. क्या माया व चीन के पंचांग भारतीय कालगणना से पूरी तरह प्रभावित हैं?
10. लू पंचांग क्या है ?
11. माया पंचांग में वर्षों की गणना.....से की जाती है।
12. माया कैलेण्डर में तिथि..... विधियों से संधारित कीजाती है।
13. पारंपरिक चीनी पंचांग एक.....पंचांग है।
14. माया सभ्यता का एक कालगणना कल्प .....मेंबंटा है।
15. भारतीय पंचांग गणनाओं में .....को मानक विचलनमाना गया है।

8.9 संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ई. जी. रिचर्ड्स, *मैपिंग टाइम : द कैलेण्डर एंड इट्स हिस्ट्री*, ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, 1999
2. माइकल जज .*द डान्स ऑफ टाइम द ओरिजिन्स ऑफ द :कैलेण्डर*. न्यू यार्कऑर्केड : पब्लिकेशन, .2004
3. https://www.timeanddate.com/calendar/about-chinese.html
4. https://www.aaas.org/myths-mayan-long-count-calendar#:~:text=The%20Tzolkin%20calendar%20is%20a,mark%20religious%20and%20ceremonial%20events.
5. एलिजाबेथ अराउवो, माया पुजारन, https://www.youtube.com/watch?v=9E3fYt__bX4

प्रश्नों के उत्तर

1. माया सभ्यता अमेरिका देश से सम्बन्धित है जो कि कोलंबियाईमीनो अमेरिकी सभ्यता से पहले की मानी जाती है।
2. माया पंचांग 18 बक्तूनों में बँटा है।
3. ताइचू पंचाग
4. जिन ने
5. कच्छप महादेश
6. 18

7. ताइचू पंचांग जो कि चीन देश का है।
8. चीनी नववर्ष (वसंत महोत्सव) पहले महीने के 1 दिन मनाया जाता है जिसे पारंपरिक रूप से 'युआन दान था झेंग री' कहते हैं।
9. हाँ
10. चीनी परंपरा के अन्तर्गत लू राज्य द्वारा चलाया गया पंचांग लू पंचांग है।
11. दोप्रकार
12. तीन विधि
13. कृषि
14. 13 बक्तूनों
15. 60 डिग्री

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY